शेख़ फ़रीद – सबद १२६
किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥
सलोक, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८४

किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥
जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥१२४॥

सार: श्रेष्ठ और हीन जैसे शब्द हमारी जीवन-यात्रा में केवल अस्थायी स्थितियों को दर्शाते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे पहाड़ों और घाटियों को पार करना। जो एक दृष्टि से ऊँचा प्रतीत होता है, वह दूसरी दृष्टि से तुच्छ भी लग सकता है, यह विविध दृष्टिकोणों के महत्व को उजागर करता है। यह उपाधियाँ केवल सामयिक स्थितियों को इंगित करती हैं, न कि किसी के वास्तविक मूल्य को, अतः हमें इन्हें अपनी विकास-क्षमता को नियंत्रित करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। इन ऊँचाइयों को अपनी व्यापक जीवन-यात्रा का ही एक हिस्सा मानकर देखने से, हम स्वयं को इन सबसे ऊपर उठने के लिए, पूरी गरिमा और दृढ़ता के साथ सशक्त बनाते हैं।

किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥
जब चेतना को शालीनता से अपनाते हैं तब हंस और बगुले में क्या भेद रह जाता है? यह दर्शाता है कि एकत्व का बोध जब जागृत होता है तब तुलनाएँ और भेद-भाव मिट जाते हैं।

जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥१२४॥
नानक कहते हैं कि यदि हमारी अंतरात्मा इस ब्रह्मांडीय प्रवाह के साथ जुड़ जाए तब कौआ भी हंस बन सकता है। इसका सार यह है कि हर प्राणी के भीतर ज्ञानोदय की क्षमता होती है कोई भी इससे अछूता नहीं है। (१२४)

तत्त्व: गुरु नानक, शेख़ फ़रीद के इस विश्वास को पुष्ट करते हैं कि हर किसी में परिवर्तन की क्षमता होती है। भले ही कोई व्यक्ति रुका हुआ प्रतीत हो, परिवर्तन हमेशा संभव है। जो हमें अपरिवर्तनीय

लगता है, वह अकसर केवल अस्थायी स्थिति होती हैं जो बस उन अंतर्दृष्टियों की प्रतीक्षा कर रही होती है जो इस ब्रह्मांडीय प्रवाह के साथ सामंजस्य बिठा सकें। मानव स्वभाव मूल रूप से गतिशील होता है, इसे अंतर्दृष्टि, चुनौतियों, प्रेम और आत्म-चिंतन के माध्यम से नया रूप दिया जा सकता है। हममें से हर कोई ज्ञान के विशाल भंडार से जुड़ा हुआ है जो हमारी विकसित होने और आगे बढ़ने की क्षमता को दर्शाता है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com